MVS 14

1. मन्दिर निर्माण के लिए भूमि चयन का विस्तार से वर्णन कीजिए।

मन्दिर निर्माण भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण और पवित्र कार्य होता है, क्योंकि मन्दिर न केवल धार्मिक पूजा स्थल होते हैं, बल्कि वे समाज में आध्यात्मिक ऊर्जा और शांति के केंद्र भी होते हैं। मन्दिर का निर्माण वास्तुशास्त्र के अनुसार किया जाता है, और भूमि का चयन इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। मन्दिर की भूमि का चयन न केवल भौतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होता है, बल्कि यह आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक शांति के लिए भी आवश्यक होता है।

वास्तुशास्त्र में मन्दिर के लिए भूमि का चयन विशेष रूप से शुद्ध, शुभ, और सकारात्मक ऊर्जा से भरी हुई होती है। सही भूमि का चयन करने से मन्दिर का निर्माण सफल होता है, और वहां आने वाले श्रद्धालुओं को शांति, मानसिक संतुलन, और आशीर्वाद मिलता है।

1. मन्दिर निर्माण के लिए भूमि चयन के सिद्धांत

वास्तुशास्त्र के अनुसार, मन्दिर के निर्माण के लिए भूमि चयन करते समय निम्नलिखित प्रमुख सिद्धांतों का पालन किया जाता है:

(a) भूमि का आकार (Size of the Land)

भूमि का आकार मन्दिर के निर्माण के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। एक सममित (चौकोर या आयताकार) भूमि का आकार शुभ माना जाता है। यदि भूमि का आकार असममित है (जैसे त्रिकोणीय, गोलाकार या अन्य विषम आकार), तो इससे नकारात्मक ऊर्जा का संचार हो सकता है।

- **सममित भूमि**: सममित आकार की भूमि, जैसे चौकोर या आयताकार, मन्दिर निर्माण के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है। इस प्रकार की भूमि पर सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह अच्छी तरह से होता है और मन्दिर में आध्यात्मिक शांति बनी रहती है।
- **विषम भूमि**: विषम आकार की भूमि, जैसे त्रिकोणीय या गोल, को मन्दिर निर्माण के लिए अनुपयुक्त माना जाता है, क्योंकि इससे ऊर्जा का संतुलन बिगड़ सकता है और नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न हो सकते हैं।

(b) भूमि का स्थान और दिशा (Location and Direction of the Land)

भूमि का स्थान और उसकी दिशा मन्दिर के वास्तु में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सही दिशा में स्थित मन्दिर का निर्माण आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ावा देता है, जबकि गलत दिशा में मन्दिर का निर्माण नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

- **उत्तर-पूर्व दिशा (ईशान कोण)**: मन्दिर का निर्माण उत्तर-पूर्व दिशा (ईशान कोण) में करना सबसे शुभ माना जाता है। यह दिशा भगवान शिव, विष्णु, सूर्य और अन्य देवताओं के लिए सबसे

पवित्र मानी जाती है। इस दिशा में स्थित मन्दिर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह अधिक होता है, और यह आध्यात्मिक उन्नति का कारण बनता है।

- **दक्षिण दिशा**: दक्षिण दिशा में मन्दिर का निर्माण शुभ नहीं माना जाता है, क्योंकि यह दिशा नकारात्मक ऊर्जा का स्रोत हो सकती है।
- **पश्चिम दिशा**: पश्चिम दिशा में मन्दिर का निर्माण भी वास्तुशास्त्र के अनुसार ठीक नहीं माना जाता है। हालांकि, इस दिशा में कुछ छोटे मंदिरों का निर्माण किया जा सकता है, लेकिन मुख्य मन्दिर के लिए यह दिशा उपयुक्त नहीं होती।

(c) जल स्रोत का स्थान (Water Source Location)

वास्तुशास्त्र के अनुसार, मन्दिर के पास जल स्रोत होना महत्वपूर्ण होता है। जल को जीवन का स्रोत माना जाता है और इसे शांति और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। मन्दिर के पास एक जलाशय, तालाब, कुआं, या नदी का होना शुभ होता है।

- **जल का स्रोत उत्तर-पूर्व दिशा में होना चाहिए**: जल का स्रोत उत्तर-पूर्व दिशा में होना चाहिए, क्योंकि यह दिशा जल तत्व के लिए उपयुक्त मानी जाती है और इसे पवित्र माना जाता है।
- **जल स्रोत का महत्व**: जल का स्रोत मन्दिर के सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह को बढ़ाता है और यह वहां आने वाले श्रद्धालुओं के लिए आशीर्वाद का कारण बनता है।

(d) भूमि का ऊँचाई (Elevation of the Land)

भूमि का ऊँचाई का स्तर भी मन्दिर निर्माण में महत्वपूर्ण होता है। मन्दिर की भूमि का स्तर समतल और स्थिर होना चाहिए।

- **समतल भूमि**: समतल और स्थिर भूमि पर मन्दिर का निर्माण करना शुभ होता है। यह भवन की स्थिरता और ऊर्जा के प्रवाह को सुनिश्चित करता है। यदि भूमि में ढलान है, तो वास्तु के अनुसार यह नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है।
- **भूगर्भीय स्थिति**: भूमि का चयन करते समय यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि यह भूकंप या अन्य प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षित हो। मन्दिर की भूमि स्थिर और मजबूत होनी चाहिए।

(e) भूमि का पर्यावरण और स्थान (Environment and Surrounding of the Land)

मन्दिर का वातावरण और उसके आसपास का पर्यावरण भी महत्वपूर्ण होता है। मन्दिर के पास शांति, स्वच्छता और सकारात्मक वातावरण होना चाहिए, ताकि वहां आने वाले श्रद्धालु मानसिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त कर सकें।

- **प्राकृतिक सौंदर्य**: मन्दिर के आसपास प्राकृतिक सौंदर्य और हरियाली होनी चाहिए। यह मानसिक शांति और शारीरिक ताजगी का कारण बनती है।

- **दूर-दूर से आवाजें**: मन्दिर का स्थान ऐसी जगह पर होना चाहिए, जहां शोर-शराबा और अन्य अव्यवस्थाएँ न हों। यह स्थान शांत और उबाऊ होना चाहिए, ताकि वहां आने वाले लोग ध्यान और पूजा में मन लगा सकें।

(f) भूमि का इतिहास और पूर्व इतिहास (History of the Land)

मन्दिर के लिए भूमि का चयन करते समय यह सुनिश्चित किया जाता है कि उस भूमि का इतिहास शुभ हो और वहां कोई नकारात्मक घटना न घटी हो। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से शुद्ध भूमि का चयन करना आवश्यक होता है।

2. मन्दिर निर्माण के लाभ

वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों का पालन करने से मन्दिर के निर्माण में अनेक लाभ होते हैं, जो न केवल मन्दिर में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए, बल्कि समाज के लिए भी महत्वपूर्ण होते हैं।

(a) सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह (Flow of Positive Energy)

मन्दिर का निर्माण वास्तुशास्त्र के अनुसार करने से वहां सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है, जिससे श्रद्धालुओं को मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है। यह ऊर्जा लोगों को शांति, संतुलन और सुख का अनुभव कराती है।

(b) समृद्धि और शांति (Prosperity and Peace)

वास्तु के अनुसार मन्दिर का सही निर्माण घर और समाज में समृद्धि और शांति लाता है। यह न केवल व्यक्तियों की आध्यात्मिक उन्नति में मदद करता है, बल्कि समाज में भी शांति और सहयोग को बढ़ावा देता है।

(c) मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य (Mental and Physical Health)

मन्दिर में आने से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। सकारात्मक ऊर्जा, शांति और पूजा से मानसिक तनाव कम होता है और शारीरिक स्वास्थ्य में भी सुधार होता है।

(d) धार्मिक और सांस्कृतिक उन्नति (Religious and Cultural Advancement)

मन्दिर का निर्माण धार्मिक और सांस्कृतिक उन्नति को बढ़ावा देता है। यह समाज को एकजुट करता है और लोगों को धार्मिक कार्यों में भाग लेने के लिए प्रेरित करता है। मन्दिर एक सामाजिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में कार्य करता है, जहां लोग अपनी धार्मिक गतिविधियाँ कर सकते हैं।

2. मूर्ति सम्बन्धी वास्तुशास्त्रीय नियम या विचारों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

वास्तुशास्त्र में मूर्तियों और उनकी स्थापना का विशेष महत्व है। मूर्तियाँ न केवल एक धार्मिक प्रतीक होती हैं, बल्कि वे सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत भी होती हैं, जो घर, मंदिर, या अन्य स्थानों में शांति, समृद्धि,

और ऊर्जा का संचार करती हैं। मूर्तियों का स्थान, आकार, दिशा और सामग्री आदि सभी पहलू वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार निर्धारित किए जाते हैं, ताकि सही प्रकार की ऊर्जा प्रवाहित हो सके और नकारात्मकता से बचा जा सके।

इस लेख में हम मूर्तियों से जुड़े वास्तुशास्त्रीय नियमों और विचारों का विस्तृत वर्णन करेंगे।

1. मूर्ति का स्थान (Placement of Idol):

मूर्ति का स्थान और उसकी दिशा का वास्तुशास्त्र में महत्वपूर्ण स्थान है। यह सुनिश्चित करता है कि मूर्ति को स्थापित करने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह हो और नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट किया जा सके।

पूजा कक्ष में मूर्ति का स्थान:

- **उत्तर-पूर्व दिशा (Ishaan Corner):** पूजा कक्ष या मंदिर में **उत्तर-पूर्व दिशा** सबसे शुभ मानी जाती है। यहां पर भगवान की मूर्ति स्थापित करना सबसे उत्तम होता है, क्योंकि यह दिशा सकारात्मक ऊर्जा और शांति का प्रतीक मानी जाती है।
- **दक्षिण-पश्चिम दिशा:** इस दिशा में मूर्ति की स्थापना से बचना चाहिए, क्योंकि यह दिशा नकारात्मक ऊर्जा का स्रोत मानी जाती है और इससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ और मानसिक तनाव हो सकता है।
- **उत्तर दिशा:** भगवान विष्णु, देवी लक्ष्मी और अन्य देवताओं की मूर्तियाँ उत्तर दिशा में स्थापित करना शुभ होता है। यह दिशा संपत्ति और समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है।
- **पूर्व दिशा:** देवी-देवताओं की मूर्तियाँ पूजा स्थल के पूर्व दिशा में भी रखी जा सकती हैं, क्योंकि यह दिशा शिक्षा, ज्ञान, और मानसिक शांति का प्रतीक है।

2. मूर्ति का आकार और आकार का चुनाव (Size and Shape of the Idol):

मूर्ति का आकार भी महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यह उसके प्रभाव को निर्धारित करता है। हर भगवान की मूर्ति का आकार और रूप उसके शक्ति और प्रभाव को बढ़ाता है।

- **मध्यम आकार की मूर्तियाँ:** सामान्यत: घरों और पूजा कक्षों में मध्यम आकार की मूर्तियाँ रखी जाती हैं। बहुत बड़ी मूर्तियाँ घर में ऊर्जा का असंतुलन पैदा कर सकती हैं, जबकि बहुत छोटी मूर्तियाँ श्रद्धा और ऊर्जा का सही संचार नहीं कर पातीं।
- **सामान्य आकार:** मूर्तियाँ आमतौर पर एक व्यक्ति के आकार के बराबर रखी जाती हैं, ताकि उनका प्रभाव घर के माहौल पर अधिक पड़े।
- **समान अनुपात (Proportional Size):** मूर्ति का आकार और अनुपात उसके देवता के महत्व और कार्य को सही रूप में व्यक्त करता है। इसे देखकर श्रद्धालु की भावना जुड़ती है और सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है।

3. मूर्ति की सामग्री (Material of the Idol):

वास्तुशास्त्र में मूर्तियों की सामग्री का भी बहुत महत्व है, क्योंकि यह ऊर्जा के प्रवाह को प्रभावित करती है। विभिन्न सामग्रियों से बनी मूर्तियाँ विभिन्न प्रकार की ऊर्जा का प्रवाह करती हैं।

- **पारद (Mercury):** पारद की बनी मूर्तियाँ विशेष रूप से ऊर्जा का तीव्र प्रवाह करती हैं और यह पूजा के लिए बहुत शुभ मानी जाती हैं। पारद से बनी मूर्तियाँ स्वास्थ्य, समृद्धि और मानसिक शांति का प्रतीक होती हैं।
- **सोना और चांदी:** सोने और चांदी से बनी मूर्तियाँ भी बहुत शुभ होती हैं। ये पदार्थ सकारात्मक ऊर्जा को संचारित करते हैं और धन और समृद्धि की ओर इशारा करते हैं।
- **संगमरमर और ताम्र:** संगमरमर (Marble) और ताम्र (Copper) से बनी मूर्तियाँ भी शुभ मानी जाती हैं। ये मूर्तियाँ शांति और सौंदर्य का प्रतीक होती हैं और पूजा कक्ष को एक धार्मिक और आध्यात्मिक वातावरण प्रदान करती हैं।
- **लकड़ी:** लकड़ी की मूर्तियाँ भी विशेष रूप से शुभ मानी जाती हैं, खासकर जब उन्हें उचित तरीके से स्थापित किया जाता है। ये मूर्तियाँ प्राकृतिक ऊर्जा से संबंधित होती हैं और घर में शांति का संचार करती हैं।

4. मूर्ति का रूप (Form of the Idol):

मूर्ति का रूप और उसकी स्थिति भी महत्वपूर्ण होती है। सही रूप की मूर्ति से देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त होता है और सही दिशा में ऊर्जा का प्रवाह होता है।

मूर्ति के विभिन्न रूप:

- **अर्ध-आनंदी रूप (Semi-animated form):** इस रूप में मूर्ति एक जीवित व्यक्तित्व की तरह प्रतीत होती है, जो अधिक ऊर्जा और जागरूकता लाती है।
- **ध्यानमग्न रूप (Meditative form):** ध्यान में लीन देवता की मूर्तियाँ शांति, संतुलन और मानसिक विकास को बढ़ावा देती हैं।
- **युगल रूप (Couple form):** कुछ देवताओं की मूर्तियाँ युगल रूप में होती हैं, जैसे शिव-पार्वती या लक्ष्मी-नारायण। यह रूप समृद्धि, प्रेम और संतुलन का प्रतीक है।

5. मूर्ति की दिशा (Direction of the Idol):

मूर्ति की दिशा का ध्यान रखना भी आवश्यक है, क्योंकि यह ऊर्जा के प्रवाह को प्रभावित करता है।

- **देवता की मूर्ति का मुख:** मूर्ति का मुख हमेशा पूजा कक्ष की मुख्य दिशा की ओर होना चाहिए, जैसे कि देवता का मुख उत्तर, पूर्व या पश्चिम की दिशा की ओर हो। यह दिशा में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है।

IGNOU MOTHER PUBLICATION - ASSIGNMENTS & GUESS PAPERS & PYQ SOLVED PDF

INDIA'S NUMBER 1 STUDY MATERIAL PROVIDER

यह केवल एक सैंपल पीडीएफ है।

यह केवल Sample PDF है। पूरी Solved Assignment या Guess Paper PDF खरीदने के लिए हमारी वेबसाइट पर जाएँ

या

WhatsApp पर मैसेज करें।

WHATSAPP ONLY: +91 9485943709

WHATSAPP ONLY:: +91 9992290905

1. Solved Assignment Visit -:: https://motherpublication.in/

2. Pyq Solved Guess paper Visit:-: https://mothernotes.in/

Mother Publication • IGNOU Study Resources